जूलाई २०१२

कीमत रु १२/-

दादा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

अक्रम एक्सप्रेस

संपादकीय

बाल मित्रों,

अबोला मतलब अपने रोज़ के अनुभव की बात....... ऐसा तो हम बोलते और सुनते ही रहते हैं "जा, आज से मैं तेरे साथ नहीं बोलूँगा।"

"मैं भी तेरे साथ बात नहीं करूँगा, फिर आना मत मेरे पास।"

"नहीं आऊँगा ह म् म्......"

"मैं सबसे कह दूँगा कि तेरे साथ बात न करें फिर देखना मज़ा आएगा।"

ऐसे डायलोग हमारे लिए नए नहीं हैं। अपने भी दोस्तों के साथ झगड़े होते ही रहते हैं और इसमें हम भी एक-दूसरे के साथ बोलना बंद कर देते हैं। लेकिन बोलना बंद करना क्या सही उपाय है? क्या इससे झगड़े का निवारण हो जाता है? नहीं।

अबोला

तो क्या करें? कट्टी तो हो गई, अब क्या करें ताकि झगड़ा भी खत्म हो जाए और एक दूसरे के साथ फिर से एकता और अभेदता हो जाए? उसकी बहुत ही सुंदर चाबियाँ परम पूज्य दादाश्री की समझ द्वारा इस अंक में प्राप्त होंगी।

तो चलो, हम भी ये चबियाँ पा लें और जब-जब किसी के साथ कट्टी हो जाए, तब-तब इन चाबियों का उपयोग करके इसमें से निकल जाएँ।

-डिम्पल मेहता

अनुक्रमणिका

दादाजी कहते है... १
यह तो नई ही बात है! २
अबोला ४
असली बुद्धिमान ७
चलो खेलें... १०
ऐतिहासिक गौरव गाथाएँ १२
मीठी यादें १४
नीरू माँ के साथ बच्चे १५
मनपसंद वार्ता १६

संपादक :
डिम्पल महेता
वर्ष : १ अंक : ३
अखंड क्रमांक :३
जूलाइ २०१२

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
अहमदाबाद : (०७९) २७५४०४०८, २७५४३९७९

राजकोट त्रिमंदिर : ९२४१११३९३
वडोदरा : (०२६५) २४१४१४२
मुंबई : ९३२३५२८९०१-०३
यु.एस.ए. : ७८५-२७१-०८६९
यु.के. : ०७९५६४७६२५३
Website: kids.dadabhagwan

Printed, Published and Owned by : Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Published at Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Printing Press:-
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपये
यु.एस.ए. :१५ डॉलर
यु.के. :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५५० रुपये
यु.एस.ए. : ६० डोलर
यु.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजे।

दादाजी कहते हैं...

दादाश्री : जब कभी मतभेद हो जाए, तब कौन-सी दवाई लगाते हो? दवाई की बोतल रखते हो?

प्रश्नकर्ता : मतभेद की कोई दवाई नहीं है।

दादाश्री : हें! क्या कहते हो? तो फिर तुम कुछ नहीं बोलते हो? तुम्हारा मित्र कुछ नहीं बोलता है। ऐसे ही मौन होकर सो जाते हो, दवाई लगाए बिना? तो फिर वह घाव क्या ठीक हो जाता है? इसकी जगह व्यापार ऐसा करना चाहिए कि वह हमें प्रेम करे और हम उसे प्रेम करें। भूलचूक तो सभी से होती है न! भूलचूक नहीं होती? भूलचूक हो उसमें मतभेद करने का क्या मतलब है? कलह, क्लेश कम हो ऐसा उपाय करना चाहिए, बोलचाल बंद हो जाए, वहाँ तक नहीं पहुँचना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : बोलचाल बंद करके बात को टाल देने से हल निकल सकता है?

दादाश्री : नहीं निकल सकता। आपको तो जब वह सामने मिले तब "कैसे हो? क्या करते है (कैसे नहीं)?" ऐसे पूछना चाहिए! सामनेवाला यदि चिल्लाए तो आपको शांति से हल निकालना चाहिए। उसका समाधान तो लाना ही पड़ेगा न, कभी न कभी? बोलचाल बंद कर देने से क्या समाधान हो जाता है? हल नहीं निकलता, इसीलिए तो बोलचाल बंद हो जाती है।

बोलचाल बंद(अबोला) मतलब बोझा, जिस बात का हल नहीं निकला है उसीका भार। फिर सामनेवाला भी रीस (चिढ़) रखता है।

हम उसे मान से बुलाएँ और वह मुँह बिगाड़े, तो समझना कि हमारा अपना ही रिएक्शन है। तब क्या करना है? प्रतिक्रमण करना है। इस संसार में दूसरा कोई उपाय नहीं है। जब कि इस दुनिया के लोग क्या करते हैं? और ऊपर से मुँह बिगाड़ते हैं। इसलिए था, वैसा का वैसा ही रहता है।

हमें तो तुरंत ही उसे रोककर कहना है, "रूको न, मेरी कुछ भूल हो गई हो तो कहो मुझे। मेरी बहुत भूल होती है और आप तो बहुत होशियार हो, पढ़े लिखे हो, तो आपसे भूल नहीं होती, लेकिन मैं तो कम पढ़ा-लिखा हूँ, अतः मेरी बहुत भूलें होती है।" ऐसा कहने से वह खुश हो जाएगा। अपनी भूल को स्वीकार करके माँफी माँगो तो सामनेवाला ज़रूर बदल जाएगा।

यह नई बात

असली बुद्धिमान तो वह जो "एवरीव्हेर एडजस्टेबल" हो।
कोई गाली दे उसके साथ भी "एडजस्ट" होकर कहे "
आओ, आओ बैठो न! कोई हर्ज नहीं।"

झगड़ा होने पर रूठते हैं
और फिर बदला लेते हैं।

तो

बुद्धि तो किसे कहेंगे कि एक भी मतभेद नहीं होने दे।

उदाहरण के तौर पर

जैसे दूध ढुल गया हो तो क्यों ढुल गया, ऐसे कलह नहीं करता। तुरंत ही कहेगा ढुल गया! कोई बात नहीं, अब दूध पोंछ दो और फिर से दूध लाकर चाय बनाओ, ऐसे धीरे से कहेगा।

ही

रुठना (अबोला) किस तरह का होता है? छः-बारह महीनों तक रहता है, फिर उसी पर बहुत प्यार आता है। फिर जब बोल-चाल शुरू होती है, तब गले मिलते हैं। दोस्तों के बीच में इतनी ज्यादा घनिष्ठता हो जाती है कि बात न पूछो!

है!

अबोला

ईशा और निशा दोनों बहनें थीं। ईशा बड़ी और निशा उससे दो वर्ष छोटी थी। दोनों एक दूसरे के बिना नहीं रह सकती थीं। वे साथ में खेलतीं, साथ में पढ़तीं, साथ में खाती-पीती और गप्पें मारतीं। दोनों को एक दूसरे के साथ रहना बहुत अच्छा लगता था। उनके पापा का ट्रान्सफर होते रहने की वजह से, बचपन से हाईस्कूल तक वे अलग-अलग शहरों में रहीं। किसी एक जगह लंबा समय न रहने के कारण उन्हें कोई दूसरी सहेली बनाने का मौका ही नहीं मिला लेकिन उन्हें किसी दूसरी सहेली की ज़रूरत ही नहीं लगती, क्योंकि वे एक दूसरे को ही अपनी सहेली मानती थी।

बेटियों की पढ़ाई में विघ्न न आए इसलिए उनके मम्मी-पापा ने एक शहर में स्थाई होने का निर्णय किया।

साल बीतने लगे। ईशा दसवीं क्लास में और निशा आठवीं क्लास में आई। दोनों अपने-अपने रूटीन में इतनी व्यस्त रहने लगीं कि एक दूसरे के लिए बिल्कुल समय नहीं निकाल पाती थीं।

अब तो दोनों की स्कूल और ट्यूशन क्लासवाली अच्छी सहेलियाँ भी बन गई थीं। धीरे-धीरे उन्हें एक दूसरें के साथ के बजाय उनकी सहेलियों के साथ ज्यादा अच्छा लगने लगा। एक दूसरे के साथ पर्याप्त समय न रहने के कारण, दोनों के बीच में अंतर बढ़ने लगा। छोटी-छोटी बातों में उन्हें मतभेद और टकराव होने लगे।

एक दिन उनके मम्मी-पापा में चर्चा हो रही थी कि लैपटोप खरीदें या स्कूटी?

"लैपटोप, मेरी सभी सहेलियों के पास लैपटोप है। और फिर स्कूल में और पढ़ाई में भी उससे बहुत मदद मिलेगी।" निशा कहने लगी।

"लैपटोप की कोई ज़रूरत नहीं है।" निशा की बात काटते हुए

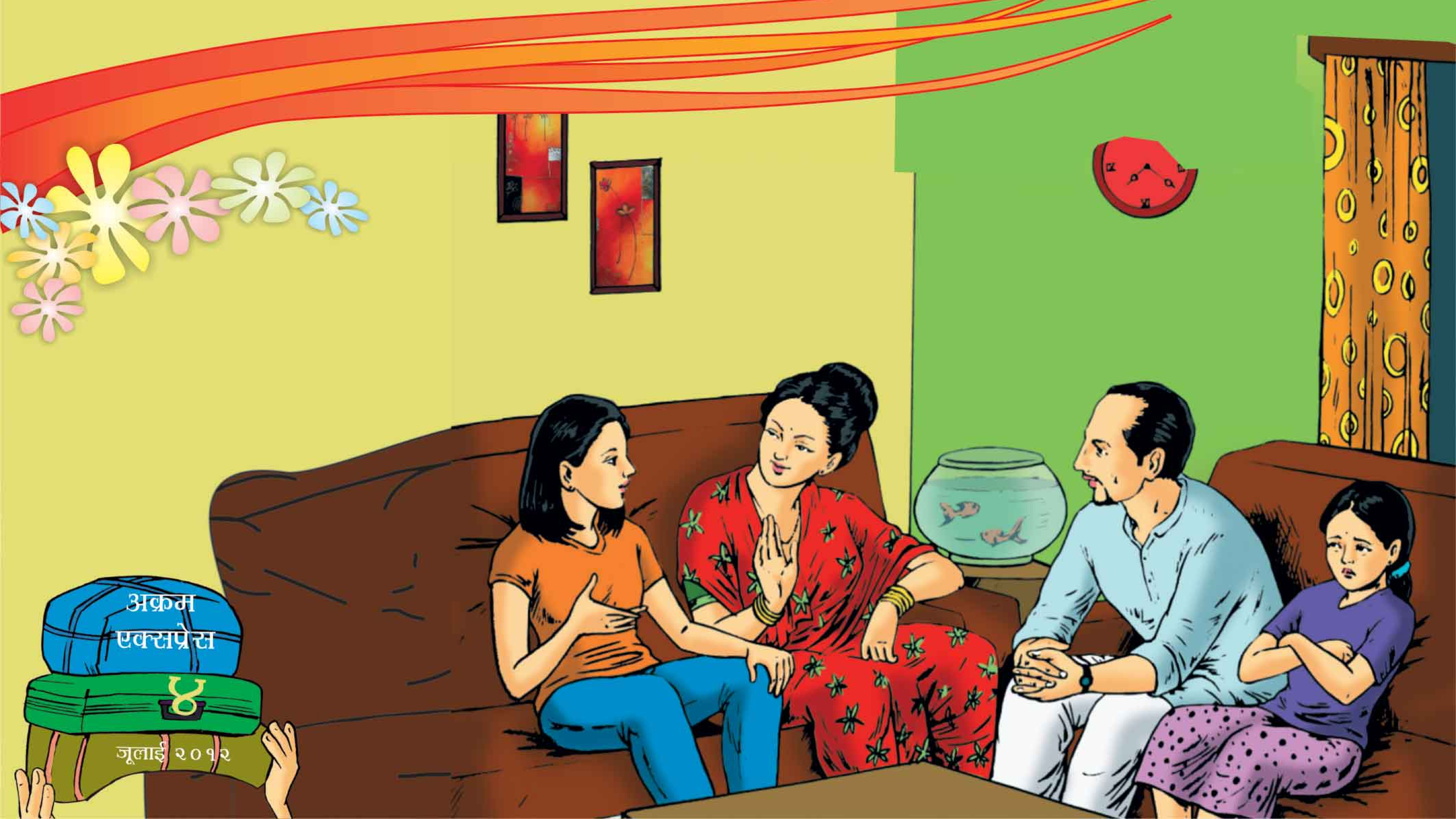

ईशा बोली। "स्कूटी पर मैं स्कूल जाऊँगी तो मेरा कितना समय बच जाएगा।"

इस तरह दोनों के बीच में मतभेद शुरू हो गया। अंत में मम्मी-पापा ने स्कूटी लेने का निर्णय लिया।

"निशा बेटा, तू कॉलेज़ में आएगी तब तेरे लिए, लैपटोप खरीदेंगे।" मम्मी ने निशा को समझाते हुए कहा। निशा को ईशा पर इतना ज्यादा गुस्सा आया कि उसने ईशा के साथ बातचीत करना ही बंद कर दिया। करीब एक हफ्ते तक दोनों ने बातचीत नहीं की।

अभी एक बात पूरी हुई-नहीं हुई कि दूसरी नई बात शुरू हो गई। हुआ ऐसा कि ईशा की बोर्ड की परीक्षा पूरी हो गई, इसलिए उनके मम्मी-पापा ने छुट्टियाँ मनाने के लिए कहीं बाहर घूमने का प्रोग्राम बनाया।

पापा ने उत्साह से पूछा, "बच्चियों छुट्टियों में कहाँ जाएँगे?"

"किसी हिल स्टेशन पर, पापा।" वेकेशन का नाम सुनते ही निशा एकदम उछल पड़ी।

"नहीं पापा, हिल स्टेशन पर नहीं, हम राजस्थान चलते हैं। कितने सालों से मुझे राजस्थान जाने की इच्छा है।" ईशा ने कहा।

आखिर में ईशा की बात मंजूर हुई, राजस्थान जाने का निश्चय किया। ऐसे भी इस साल बॉर्ड की परीक्षा होने के कारण वह बहुत बाहर नहीं जाती थी और उसने मेहनत भी बहुत की थी। इसलिए उसकी मनपसंद जगह जाना उन्हें योग्य लगा।

"निशा हिल स्टेशन पर अगले साल जाएँगे। इस साल राजस्थान घूम आते हैं।" मम्मी ने निशा को समझाने का प्रयत्न किया।

लेकिन निशा तो ईशा से बहुत नाराज़ होकर बोली, "जा, अब तेरे साथ कभी भी बात नहीं करूँगी, हमेशा आपनी ही मनमानी करवाती है।" यह कहकर निशा रोते-रोते दौड़कर कमरे में चली गई।

राजस्थान पहुँचने के बाद भी निशा सभी जगह मुँह फुलाकर घूमती रही। निशा का मूड अच्छा करने के लिए एक शाम उसके पापा उसे ऊँट की सवारी कराने के लिए ले गए। उसकी मम्मी और ईशा ने उस समय बाज़ार में शॉपिंग करने का प्लान बनाया। शॉपिंग करके होटल के रूम में जा रहे थे कि तभी उसकी मम्मी के सेलफोन की रिंग बजी।

"हलो" मम्मी धीरे से बोली। "क्या?" मम्मी के कपाल की रेखाएँ एकदम खिंच गई और आँख में से टप-टप आँसू बहने लगे, ईशा समझ गई कि कुछ अनहोनी हो गई है। वह मम्मी के फोन रखने का इन्तज़ार करने लगी। एक-एक सेकन्ड उसे खूब लंबा लग रहा था।

"निशा ऊँट पर से गिर गई है। उसे बहुत चोट आई है। पापा उसे नज़दीक के अस्पताल में ले गए हैं।" मम्मी ने आँसू पोंछते हुए कहा।

"क्या?" ईशा के हृदय की धड़कने एकदम बढ़ गई। अस्पताल पहुँचने तक पूरे रास्ते में ईशा को तरह-तरह के विचार आने लगे। ट्रिप पर आने से पहले निशा के कहे हुए शब्द उसके कानमें गूँजने लगे, "जा, अब तेरे साथ कभी भी बात नहीं करूँगी" और ये शब्द याद आते ही उसकी आँखों से आँसू बहने लगे।

वे दोनों अस्पताल पहुँचीं। निशा को ऑपरेशन थिएटर में ले गए थे। ईशा का दिल भर आया। उसे बचपन से लेकर आज तक निशा के साथ बिताए हुए सुंदर पल याद आने लगे और साथ-साथ उसके साथ हुए मतभेद और कट्टी करने पर उसे पछतावा होने लगा।

थोड़ी देर के बाद डॉक्टर बाहर आए। निशा के पापा के कँधे पर हाथ रखकर, उन्होंने सांत्वना देते हुए कहा, "कुछ सिरियस नहीं है। ज़बड़े में फ्रेक्चर हुआ है। ठीक होते-होते २-३ महीनें लगेंगे। लेकिन सच कहूँ तो आपकी बेटी बच गई समझो! सिर में चोट आई होती तो केस बहुत सीरियस हो जाता।"

निशा होश में आई तब उसने देखा कि, ईशा उसका हाथ पकड़कर बैठी है। वह कुछ बोलने गई, लेकिन वह मुँह नहीं खोल सकी। इशारे से उसने मम्मी से एक पेन और पेपर माँगा। कुछ लिखकर उसने ईशा के हाथ में पेपर दिया। ईशा पढ़ने लगी। फ्रेक्चर का दर्द अबोला के बोझ से बहुत कम है! दीदी, इस फ्रेक्चर के कारण जब तक नहीं बोल सकती हूँ, तब तक ही अपनी कट्टी रहेगी, उसके बाद तुम्हारे साथ कभी भी कट्टी नहीं करूँगी। चलो न दीदी, हम पहले की तरह दोस्त बन जाएँ।"

पढ़कर ईशा का गला भर आया। उसने निशा का हाथ प्रेम से सहलाया और दोनों एक दूसरे के सामने देखकर धीरे से मुस्कुराए।

दीदी, इस फ्रेक्चर के कारण जब तक नहीं बोल सकती हूँ, तब तक ही अपनी कट्टी रहेगी, उसके बाद तुम्हारे साथ कभी भी कट्टी नहीं करूँगी।

असली बुद्धिमान

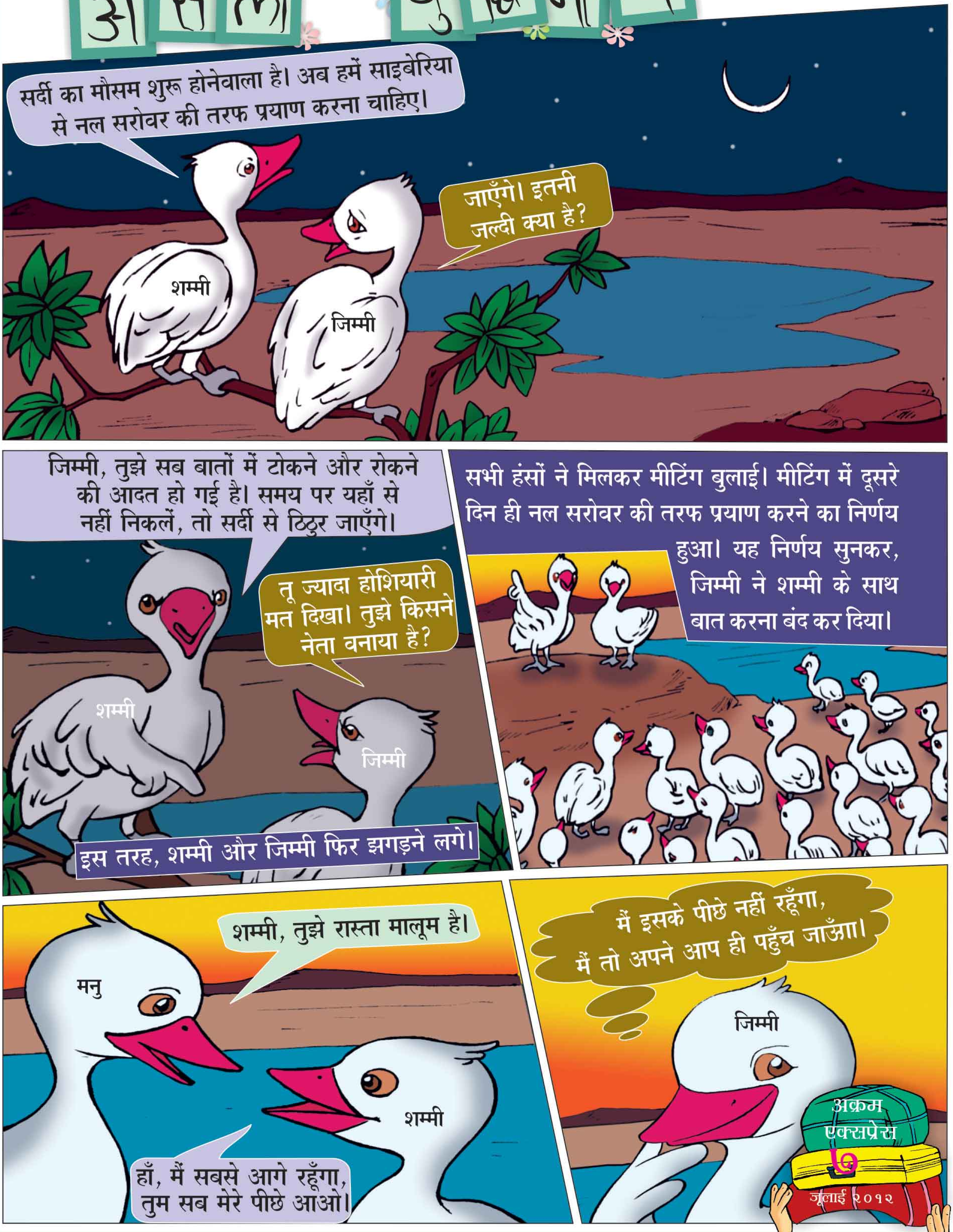

सर्दी का मौसम शुरू होनेवाला है। अब हमें साइबेरिया से नल सरोवर की तरफ प्रयाण करना चाहिए।
जाएँगे। इतनी जल्दी क्या है?
शम्मी
जिम्मी
जिम्मी, तुझे सब बातों में टोकने और रोकने की आदत हो गई है। समय पर यहाँ से नहीं निकलें, तो सर्दी से ठिठुर जाएँगे।
तू ज्यादा होशियारी मत दिखा। तुझे किसने नेता बनाया है?
शम्मी
जिम्मी
इस तरह, शम्मी और जिम्मी फिर झगड़ने लगे।
सभी हंसों ने मिलकर मीटिंग बुलाई। मीटिंग में दूसरे दिन ही नल सरोवर की तरफ प्रयाण करने का निर्णय हुआ। यह निर्णय सुनकर, जिम्मी ने शम्मी के साथ बात करना बंद कर दिया।
शम्मी, तुझे रास्ता मालूम है।
मनु
शम्मी
हाँ, मैं सबसे आगे रहूँगा, तुम सब मेरे पीछे आओ।
मैं इसके पीछे नहीं रहूँगा, मैं तो अपने आप ही पहुँच जाऊँगा।
जिम्मी

हंसों का झुंड, वी आकर में उड़ रहा था। जिम्मी सबसे दूर अकेला उड़ रहा था।
जिम्मी
थोड़ी देर के बाद....
मनु
जिम्मी ऐसे अकेले-अकेले उड़ोगे तो थक जाओगे। कट्टी करके अकेले-अकेले उड़ने में कोई फ़ायदा नहीं है। हमारे साथ उड़ोगे तो तुम्हें ताकत मिलेगी।
जिम्मी
नहीं चाहिए तुम्हारी ताकत।
मनु
अरे दोस्त, अभी तो हमें कितना लंबा रास्ता पार करना है! तू तो अभी से हाँफ रहा है। तुझे मालूम है, तू सिर्फ १०० कि.मी. ही उड़ सकता । जब कि उतने ही समय में वी रचना में हम सब साथ में मिलकर १७१ कि.मी. उड़ सकते हैं। वी रचना में उड़ने से अपनी कार्यक्षमता ७१ प्रतिशत बढ़ जाती है। चल न दोस्त!
जिम्मी मुँह बिगाड़ करवी रचना में जुड़ गया। थोड़ी देर बाद ज़ोरदार हवा चलने लगी और तेज़ आँधी आई। शम्मी रास्ता भूल गया। उसने सभी हंसों को ज़मीन पर उतरने का इशारा किया।
मैंने तो पहले ही कहा था कि शम्मी सिर्फ होशियारी दिखा रहा है। उसे कुछ मालूम नहीं है। भटका दिया न हमें।अब तुम सब मेरे पीछे आओ।
जिम्मी
थोड़े हंस जिम्मी की बातों में आ गए। इस तरह जिम्मी ने अपनी अलग टोली बना ली।

झगड़ा और मतभेद करने से हम अपने लक्ष्य तक कभी नही पहुँच सकेंगे। शम्मी, इस बात का कुछ हल लाओ,नहीं तो हम सभी भटक जाएँगे।
मनु
शम्मी को मनु की बात समझ में आ गई। जिम्मी के साथ टकराने में सभी का नुकसान था।
जिम्मी, मेरी भूल हो गई। तू सच ही कहता था कि मुझमें अक्ल कम है। दोस्त,हम सब साथ में रहेंगे, तभी पार निकल पाएँगे। तुम आगे रहना और हम सब तुम्हारा अनुकरण करेंगे।
शम्मी
काफी दूर तक जिम्मी आगे उड़ता रहा। सबसे आगे उड़ने के कारण उसे खूब थकान होने लगी।
शम्मी
जिम्मी, लगता है तू थक गया है। अब हम इस काम को बाँट लेते हैं। मैं आगे आ जाता हूँ। तू सबसे पीछे चला जा जिससे तुझे आगे के हंसों की ताकत मिल जाए और उड़ने में कम मेहनत पड़े।
इस तरह किसी एक हंस पर वज़न न पड़े, ऐसे सभी हंस एक के बाद एक बारी-बारी आगे जाकर उड़े और काम बाँट लिया और समय पर सभी नल सरोवर पहुँच गए।
जब सब नल सरोवर पहुँचे, तब तक जिम्मी बहुत थक गया था।
जिम्मी
अब मुझे समझ में आया कि हंसों के सहकार और मदद के बिना मैं अकेला कभी यहाँ तक नहीं पहुँच सकता था। मतभेद और कट्टी करने से तो कोई भी फायदा नहीं है। तुमने सबको खराब स्थिति से बचा लिया।
सच बात है। भूलचूक तो सबसे होती है। पर असल बुद्धिमान वही कहलाता है जो क्लेश न होने दे और इस तरह हल निकाल ले।
जिम्मी
मनु
शम्मी

चलो खेलें...

१ नीचे दिए गए चित्र में से १२ फ़र्क ढूँढो।

२

मित्रों यहाँ दो क्रॉसवर्ड दिए हैं। ऊपर के क्रॉसवर्ड के हर एक शब्द का किसी न किसी तरह से नीचे दिए गए क्रोसवर्ड के शब्दों के साथ संबंध है। इन शब्दों को जोड़कर नीचे दी गई खाली जगह भरें। देखा, सिर खुजलाने लगे न?

सत्संग	अक्रम एक्सप्रेस	यात्रा	पॉज़िटिव	मई वेकेशन
भक्ति	जन्म जयंति	बर्थ डे	नीरू माँ	प्रतिक्रमण
दादाश्री	सीमंधर सिटी	आत्मज्ञान	एडजस्ट	अक्रम ज्ञान

समर केम्प	दृष्टि	ज्ञानीपुरुष	ज्ञानविधि	एबरी व्हेर
जेकपोट	विज्ञान	जादुई रब्बर	गरबा	बाल विज्ञान
वात्सल्य	अड़ालज	प्रश्नोतरी	शक्ति माँगना	किड्स पार्क

उदाहरण के तौर पर: सत्संग प्रश्नोतरी

१)............................ ८)............................

२)............................ ९)............................

३)............................ १०)............................

४)............................ ११)............................

५)............................ १२)............................

६)............................ १३)............................

७)............................ १४)............................

१) अक्रम एक्सप्रेस- बाल विज्ञान, २) यात्रा- जेकपोट, ३)पॉज़िटिव- दृष्टि
४) मई वेकेशन- समर केम्प ,५)भक्ति- गरबा, ६)जन्म जयंति- किड्स पार्क
७) बर्थ डे- शक्ति माँगना, ८) नीरू माँ- वात्सल्य, ९) प्रतिक्रमण- जादुई रब्बर
१०) दादाश्री- ज्ञानीपुरुष, ११) सीमंधर सिटी- अड़ालज,१२) आत्मज्ञान- ज्ञानविधि
१३) एडजस्ट- एबरी व्हेर , १४) अक्रम ज्ञान- विज्ञान

५

बालकों, यहाँ नीचे दिए गए चित्र में
एक वाक्य छुपाया गया है,
उसे फटा-फट ढूँढ लीजिए......

४

नीचे के दाहिने कोने में पर्वतों का ऊपरी भाग का दृश्य दिखाई दे रहा है। अन्य तीन पर्वतों का चित्र सामने की तरफ़ से दिखाई देनेवाला दृश्य है। वे तीनों में से कौन-सा दृश्य ऊपर के दाहिने कोने के दृश्य के अनुरूप है?

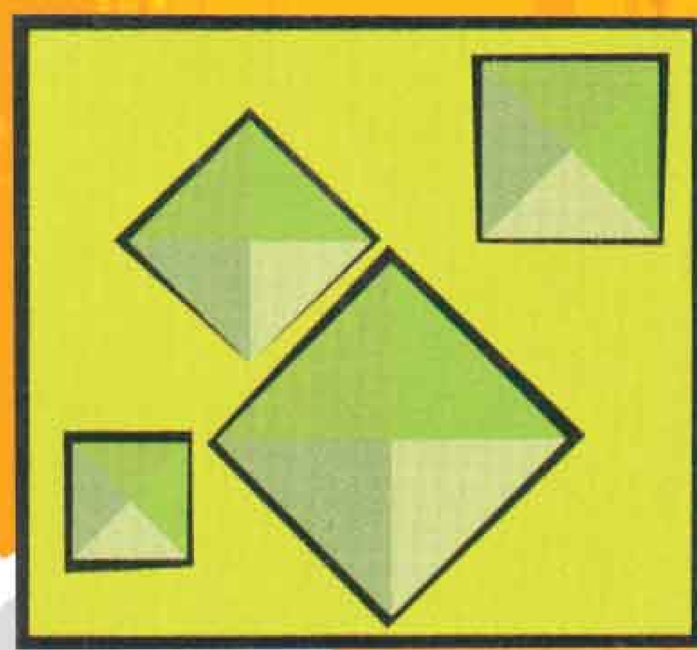

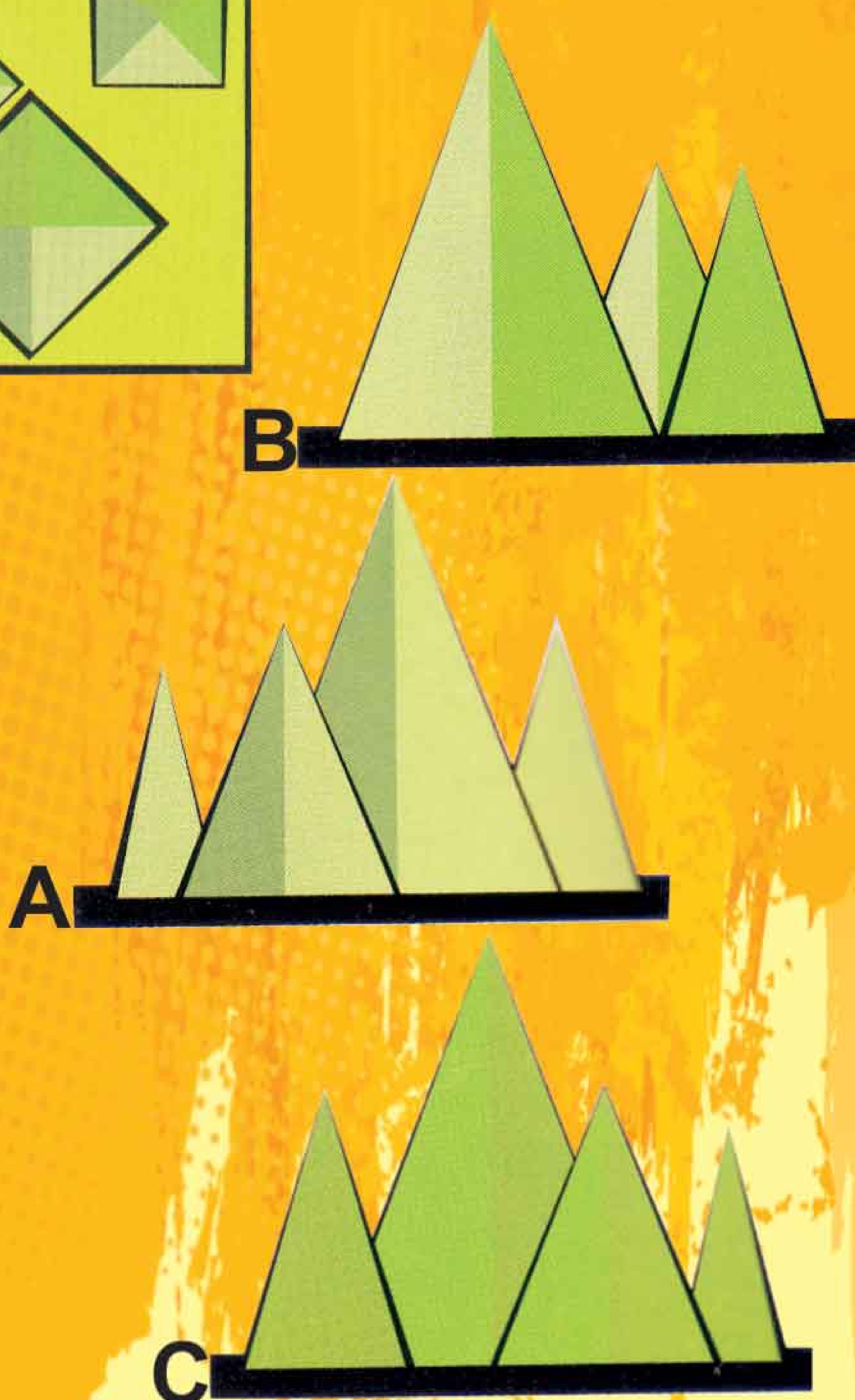

३

खाली खाने उस तरह से भरें,जिससे हर एक सीधी लाईन, खड़ी लाइन के ३ * ३ के ब्लोक में सब १ से ९ के नंबर होने चाहिए। यदि आप बुद्धि का इस्तेमाल करोगे तो आपको अटकल नहीं लगानी पड़ेगी।

	4			1				8
7	6	2	9		4			
	8	5	3	2	7		9	
6				4			1	
4	2						8	7
	9			5				2
	7		1	9	2	8	3	
			4		3	9	6	5
9				6			2	

६

नीचेवाली दो माचिस की तीलियों को हटाकर इस तरह से रखो कि जिससे वे ४.३० का समय दिखाएँ।

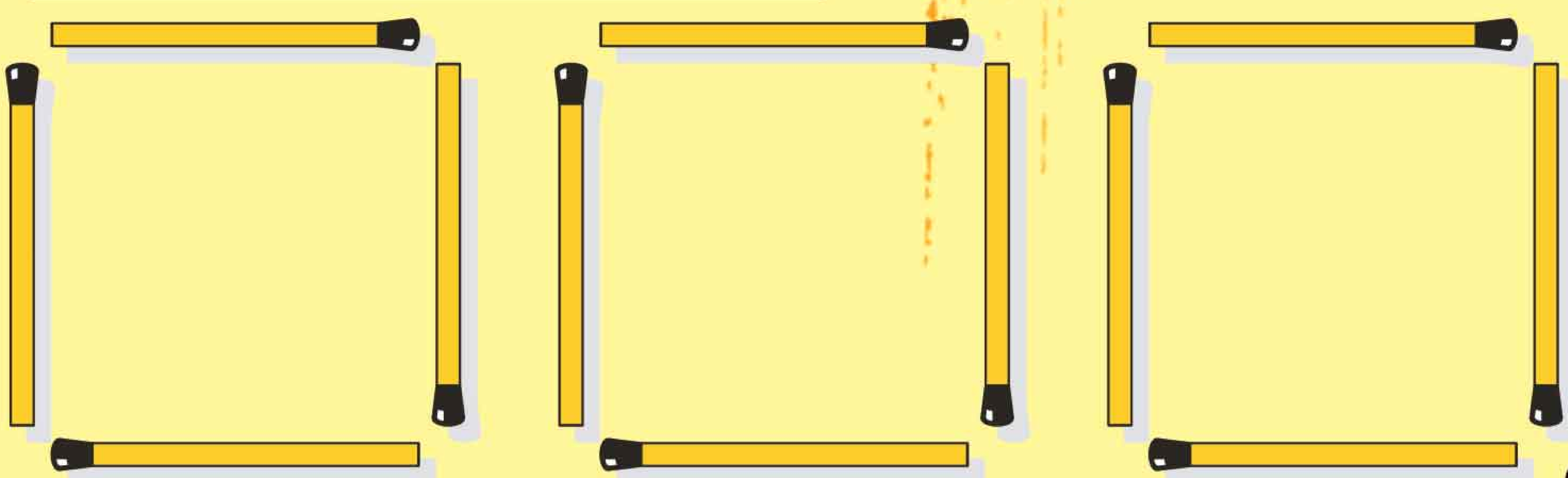

ऐतिहासिक गौरवगाथाएँ

कौशांबी नगरी में ब्राह्मण कुल में कपिल मुनि का जन्म हुआ था। उनके पिता काश्यप राजपुरोहित थे। इसलिए राजा से और राज्य से उन्हें खूब सम्मान मिलता था। घर से राजदरबार तक वे उत्तम प्रकार के घोड़े पर बैठ कर जाते थे। कपिल छोटा था, तभी उसके पिताजी की मृत्यु हो गई। राजा ने दूसरे ब्राह्मण को राजपुरोहित की जगह दे दी।

एक दिन कपिल के घर के आगे से नए राजपुरोहित घोड़े पर बैठकर निकल रहे थे। यह देखकर कपिल की माताजी को पुराने दिन याद आ गए और वे सोचने लगीं कि एक दिन ऐसा था, जब मेरे पति भी इस पदवी पर थे और ऐसे ही सम्मान के साथ वे भी घोड़े पर बैठकर दरबार जाने के लिए निकलते थे। कपिल पढ़ा-लिखा नहीं था, इसलिए ऐसे दुःख के दिन आए। ऐसा सोचते-सोचते कपिल की माताजी की आँख से आँसू गिरने लगे। कपिल ने यह देखा और माताजी से रोने का कारण पूछा। बहुत आनाकानी के बाद माताजी ने बात बताई। अगर तू पढ़ा होता तो इस राजपुरोहित की पदवी पर तू होता और हम कितने सुखी होते!

यह सुनकर कपिल विद्याभ्यास के लिए श्रीवस्ती नगरी में अपने पिता के मित्र इन्द्रदत्त पंडित के यहाँ पढ़ने गया। उसने पढ़ना शुरू किया। कुछ समय बाद एक बड़ी मुश्किल आ गई। कपिल के रहने और खाने की व्यवस्था इन्द्रदत्त ने एक विधवा ब्राह्मणी के यहाँ की थी। धीरे-धीरे दोनों को एक-दूसरे के प्रति लगाव हो गया और दोनों ने शादी कर ली। विद्याभ्यास करना रह गया। घर-संसार में पड़ने के कारण कपिल के सिर पर आर्थिक ज़िम्मेदारियाँ आ गईं। किस तरह पैसे कमाए, वह इसी सोच में पड़ गया। एक दिन उसकी पत्नी ने रास्ता बताय कि यहाँ के राजा को सुबह जल्दी उठकर जो सबसे पहले आशीर्वाद देता है, उसे राजा दो माशा (भार की एक इकाई) सोना देता है। अगर आप पहले जाकर आशीर्वाद देकर दो माशा सोना ले आओ, तो अपना थोड़े दिन तक गुज़ारा चलेगा।

कपिल ऐसा करने के लिए तैयार हो गया। उससे पहले कोई दूसरा ब्राह्मण आशीर्वाद दे देगा और वह रह जाएगा इस चिंता में कपिल को रातभर नींद ही नहीं आई। रात कितनी हुई यह पता न चलने से वह आधी रात को ही दरबार की तरफ दौड़ा। रास्ते में चौकीदारों ने उसे चोर समझकर पकड़ लिया और सुबह सभा में उसे पेश किया। राजा ने कपिल को हकीकत बताने के लिए कहा। कपिल हमेशा राजा, गुरु, देवता, माता-पिता, मित्र और सेठ के सामने कभी झूठ नहीं बोलने का नियम पालता था। अतः उसने सच्ची बात राजा से कह दी। राजा कपिल की बात सुनकर बहुत खुश हुआ और उसने कपिल को जो माँगे वह देने का वचन दिया और उसके लिए उसे सोचने का समय दिया।

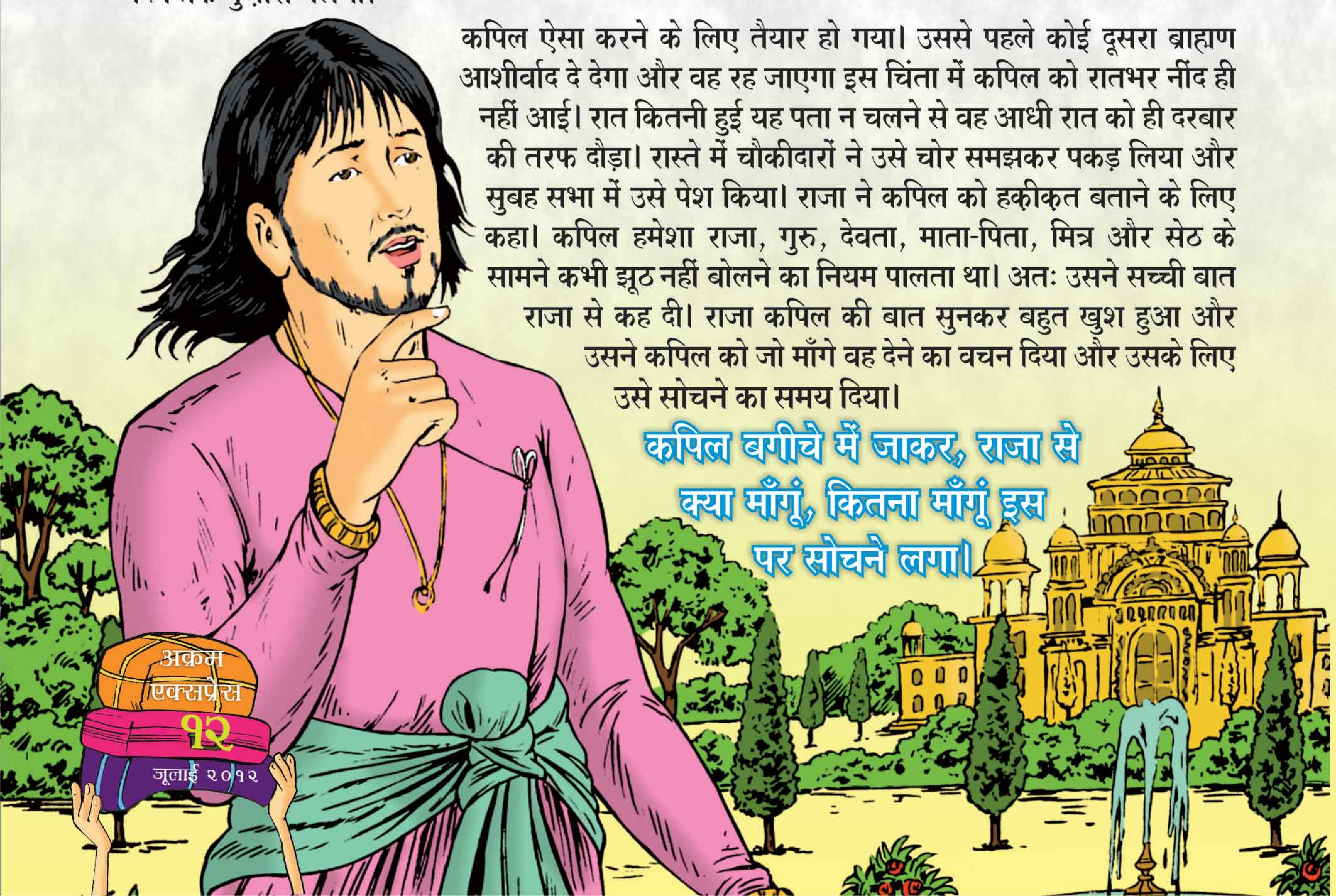

कपिल बगीचे में जाकर, राजा से क्या माँगूं, कितना माँगूं इस पर सोचने लगा। दो माशा सोना तो कितने दिन चलेगा? उसके बदले पाँच मुहर माँग लूँ। अरे! पाँच मुहर से भी कुछ नहीं होगा। इसलिए पच्चीस मुहर माँग लूँ। ऐसे धीरे-धीरे १००,५००,१०००, लाख, करोड़ मुहर से लेकर राजा का राज्य ही माँग लूँ, वहाँ तक उसकी इच्छा हो गई।

ऐसा तय करके ऐसा सोचकर जैसे ही वह खड़ा हुआ उसे विचार आया कि जो राजा मुझे कुछ देना चाहता है उसीका राज्य ले लेना यह क्या मुझे शोभा देगा? अरेरे! यह मैंने कैसा विचार किया? मुझे राज्य की या करोड़ सोने मुहरों की क्या ज़रूरत है? मैं दो माशा सोना भी क्यों लूँ? मैं क्यों संतोष नहीं रख सकता? इच्छा का तो कोई अंत ही नहीं है। उसे लगा कि वह तो विद्याभ्यास के लिए आया था, उसमें तो वह संसार की माया में फँस गया। इसलिए तो धन की ज़रूरत आ पड़ी न ! इसलिए यदि संसार का त्याग करूँ, तो इस मुश्किल में से बाहर निकल सकता हूँ। उसे अपनी भूल पर बहुत पश्चाताप होने लगा। पछतावा करते-करते उसके अंदर के आवरण खुल गए और उसे केवळज्ञान प्रकट हुआ। कपिल साधुवेश धारण करके राज्यसभा में गया। उसे इस वेश में देखकर राजा ने पूछा, "अरे, कपिल! यह किस वेश में आ गए हो? और क्या माँगने का निश्चय किया?" कपिलमुनि ने राजा को उपदेश दिया। उपदेश सुनकर राजा और सभा के कई लोगों ने कपिलमुनि से दीक्षा ली और आत्मकल्याण किया।

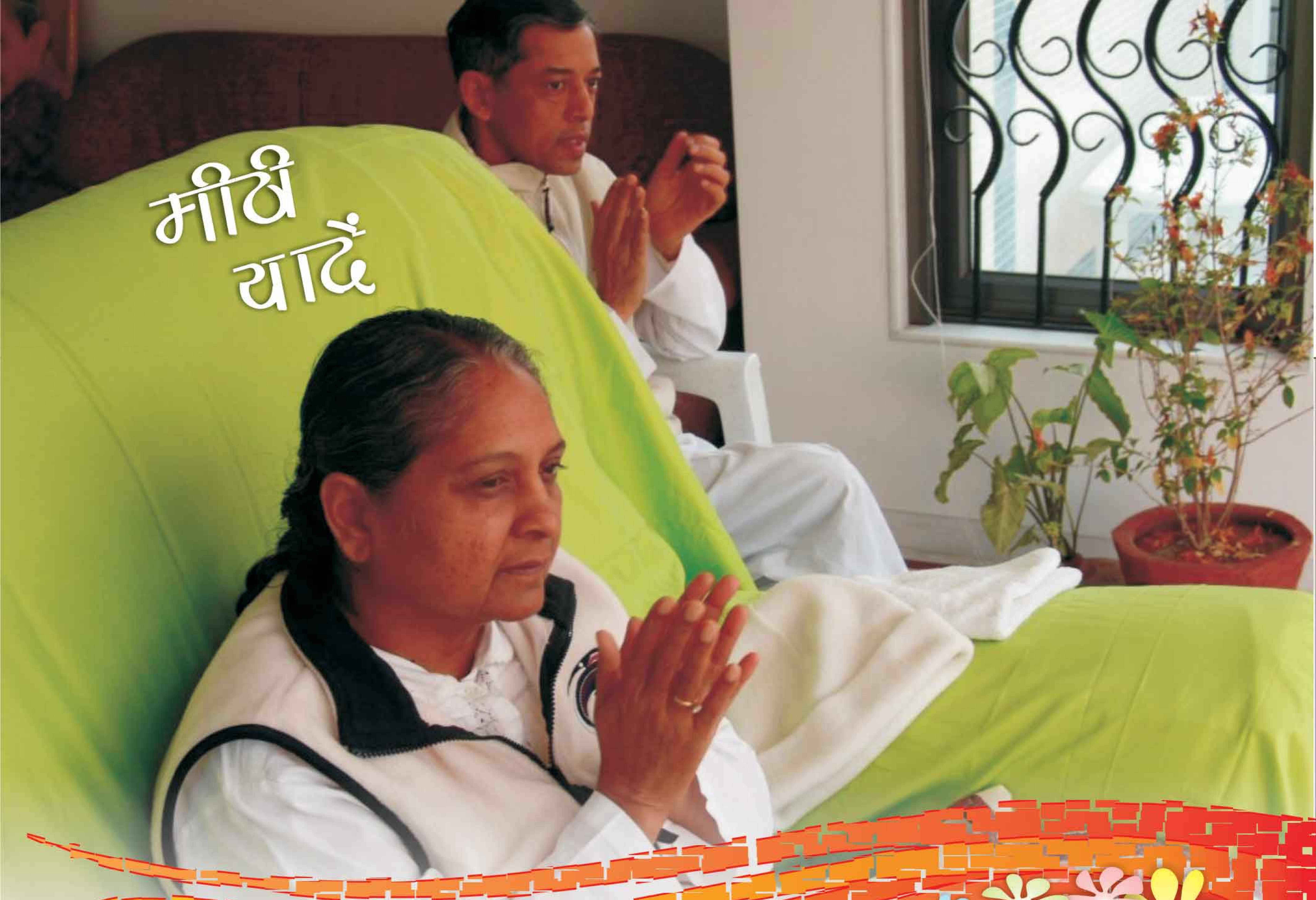

नीरु माँ के साथ सभी ब्रह्मचारी बहनें रहती थीं। उनमें से एक बहन को रोज़ शाम को घर की सभी खिड़कियाँ बंद करने की ज़िम्मेदारी सौंपी थी।

रोज़ शाम को वह बहन सभी खिड़कियों की जाली और दरवाज़े बंद कर देती थी।

सर्दी के दिन थे। रोज़ वह बहन खिड़कियाँ बंद कर देती थी। उसमें कौने की एक खिड़की रोज़ बंद करनी भूल जाती थी। वह खिड़की ऐसी जगह पर थी कि किसीको जल्दी न दिखे, अतः रोज़ रह जाती थी। उस खिड़की में से हवा सीधी नीरु माँ जहाँ बैठती थीं, वहाँ जाती थी।

थोड़े ही दिनों में नीरु माँ के जोड़ो में जकड़न आ गई। उन्होंने किसीको नहीं बताया।

दूसरी बार नीरु माँ जब उस जगह पर बैठीं, तब बस उन्होंने इतना ही कहा कि, "यह खिड़की खुली रह गई हैं, बंद कर दो।"

दूसरे दिन से वह बहन सभी खिड़कियाँ बंद कर देतीं, फिर पूज्य दीपकभाई रोज़ शाम को सब देखने आते कि सभी खिडकियाँ बंद हैं न! कोई खिड़की खुली तो नहीं रह गई न!

देखा मित्रों, हम से दूसरे को तकलीफ़ पड़े तो नीरु माँ तुरंत समझातीं, लेकिन उन्हें तकलीफ़ पड़ती तो कुछ भी नहीं कहती थक। खुद ही एडजस्टमेन्ट ले लेती थीं। वे और दीपकभाई आपस में समझ लेते, लेकिन किसीको पता नहीं पड़ने देते थे।

अद्भुत है ज्ञानियों का मौन एडजस्टमेन्ट!

नीरु माँ के साथ बच्चे

प्रश्नकर्ता :नीरु माँ, मेरी प्रकृति इस तरह की है कि मैं लोगों को बहुत परेशान करती हूँ। इसमें मेरी किसीको दुःखी करने की इच्छा नहीं होती, पर मेरी मस्ती की वजह से मम्मी-पापा और सब दुःखी हो जाते हैं। इसमें मेरी छेड़खानी, बाल खींचना, चोटी पकड़ना ऐसी सब मस्ती होती हैं और मम्मी-पापा को और बहन को यह बिल्कुल अच्छा नहीं लगता।

मम्मी के साथ भी ऐसी ही छेड़खानी करती हूँ। छेड़खानी करने का मन हो जाता है, उससे फिर झगड़ा हो जाता है।

नीरु माँ : एक काम कर बड़ी गुड़िया रख, बड़े बालवाली। फिर उसके बाल खींचा कर। थोड़ी-थोड़ी देर में गुड़िया के बाल खींच कर आना।

प्रश्नकर्ता :अब क्या करूँ? मेरी प्रकृति ऐसी क्यों है कि सब मुझसे दुःखी हो जाते हैं?

नीरु माँ :यह तो खराब आदत है। बोरियत हो जाए (परेशान हो जाए) ! रोज़-रोज़ कोई थोड़े ही अच्छा लगता है। मम्मी के, बहन के सबके बाल खींचती है?

प्रश्नकर्ता :बस यों ही मस्ती में। हेरान करती हूँ बस ऐसे ।

नीरु माँ :तेरे कोई बाल खींचे, तेरी मस्ती करे तो तुझे अच्छा लगेगा?

प्रश्नकर्ता :नहीं अच्छा लगेगा।

नीरु माँ :नहीं अच्छा लगेगा न? तो फिर तुझे सोचना चाहिए कि उनकी जगह मैं होती तो मुझे कैसा लगता?

प्रश्नकर्ता :सब सोचा है, लेकिन ऐसे कंट्रोल ही नहीं रहता। ऊँब्र जाती हूँ तो फिर मस्ती करने निकल जाती हूँ।

नीरु माँ :पर दूसरी कोई प्रवृति ढूँढ ले न। "दादा भगवान के असीम जय जयकार हो" बोल। दादा के पद और भजन की केसेट सुन। किताबें ले जा, उन्हें पढ़। लेकिन इसका तो कोई मतलब ही नहीं न! अपने से सामनेवाले को दुःख हो, ऐसा तो करना ही नहीं चाहिए। कुछ भी हो पर अपने से किसीको दुःख नहीं होना चाहिए। घर के हों या बाहर के हों अपने से किसीको दुःख नहीं होना चाहिए। दुःख हो तो अंदर तुरंत ही पश्चाताप करना चाहिए। प्रतिक्रमण करना चाहिए। यानी मम्मी, बहन का, सबका प्रतिक्रमण कर कि, "यह गलत है, मेरी ही भूल है" ऐसा मन में पश्चाताप करना शुरू कर दे, तो फिर अपने आप ही सब छूट जाएगा। मम्मी के पास जाकर माफ़ी माँगना।

मनपसंद कहानियाँ

तुझे मालूम हैं? नीरु माँ रोज़ दादाजी को खाना परोसती थीं।

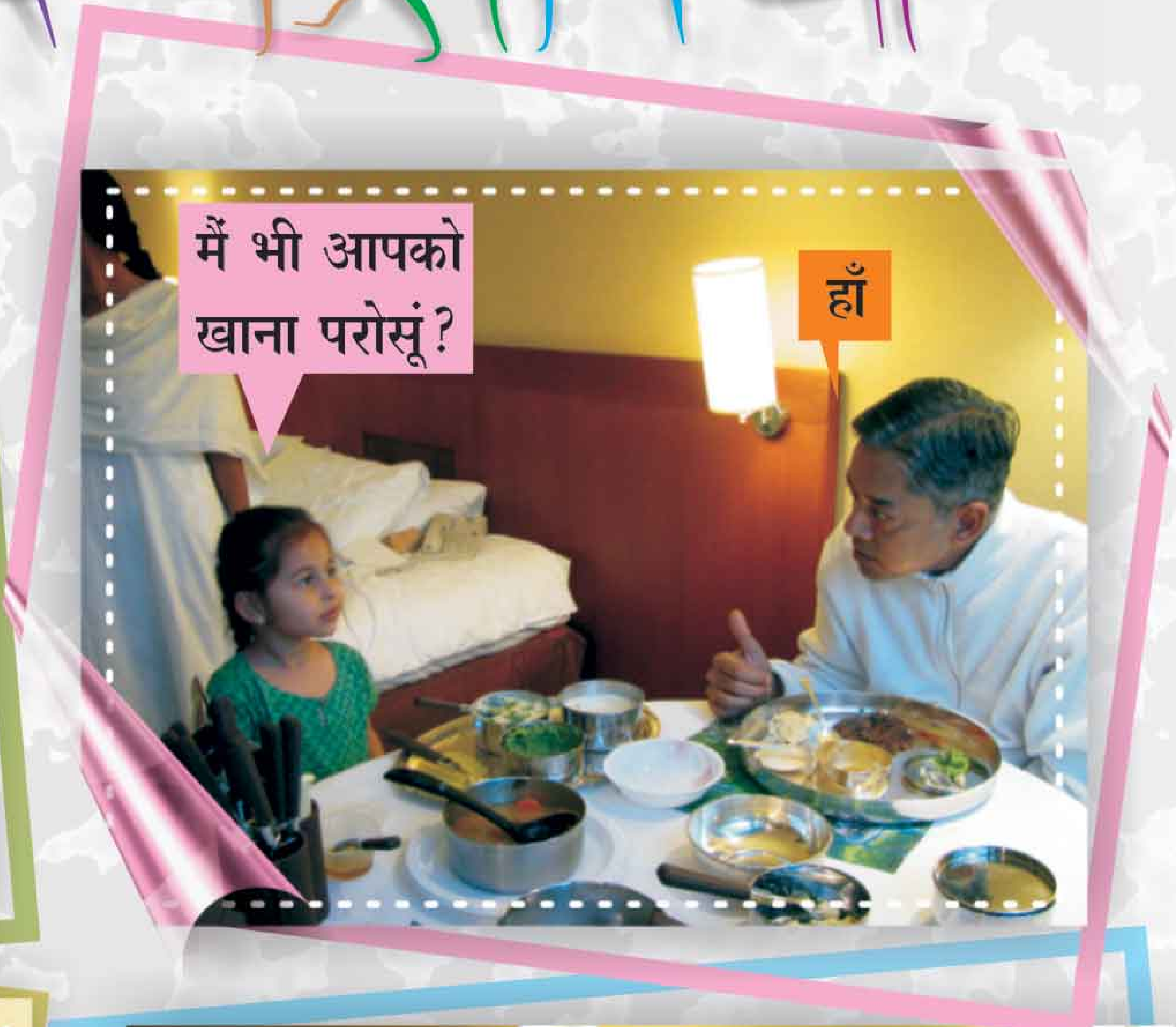

मैं भी आपको खाना परोसूं?
हाँ

लीजिए दीपकभाई।
ऐसे नहीं, थाली में परोसना चाहिए।

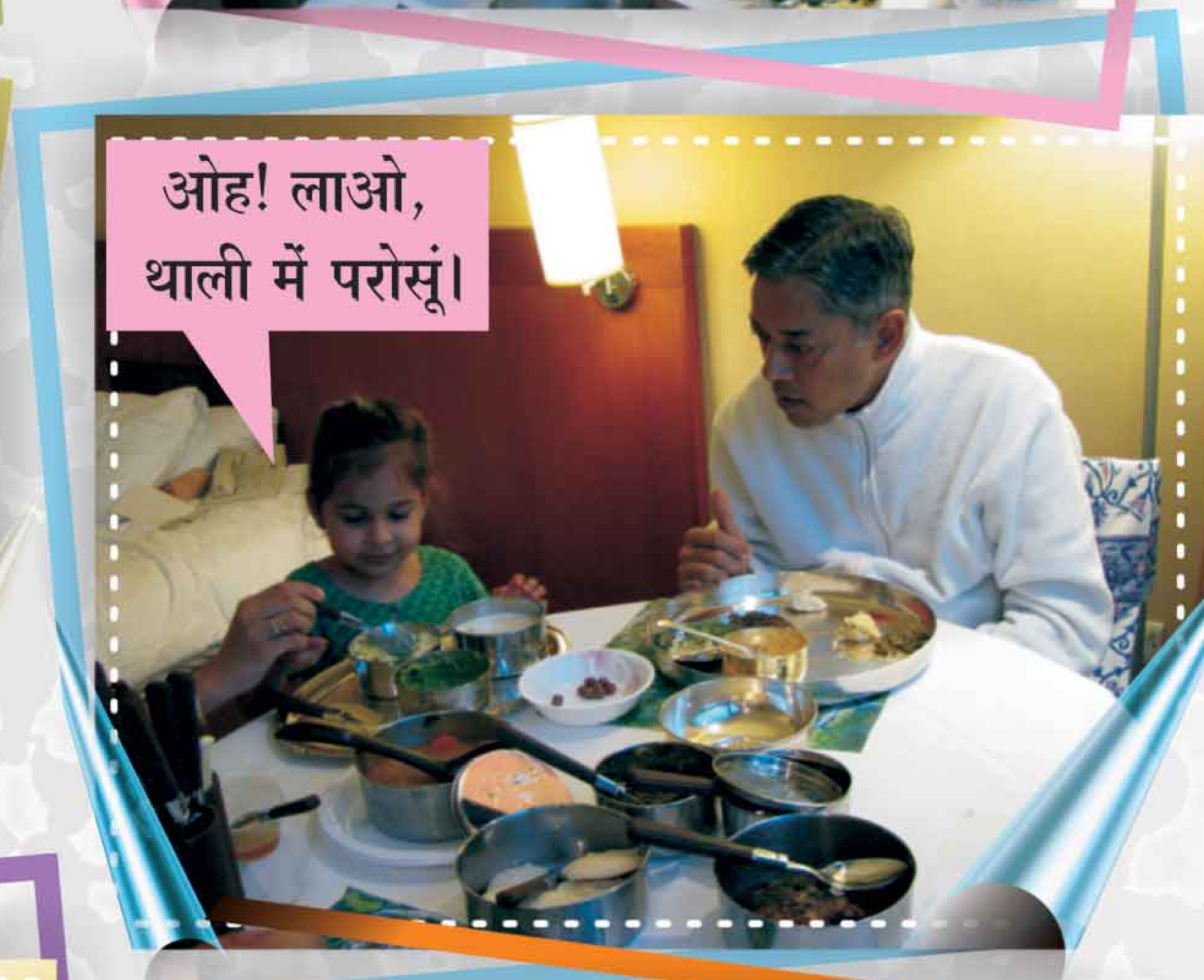

ओह! लाओ, थाली में परोसूं।

कहाँ रखूँ?
यहाँ।

जैसे नीरु माँ दादाजी को खाना परोसती थीं, वैसे ही आज मैंने भी पूज्य दीपकभाई को खाना परोसा। मुझे बहुत मज़ा आया।

पहेलियों के जवाब

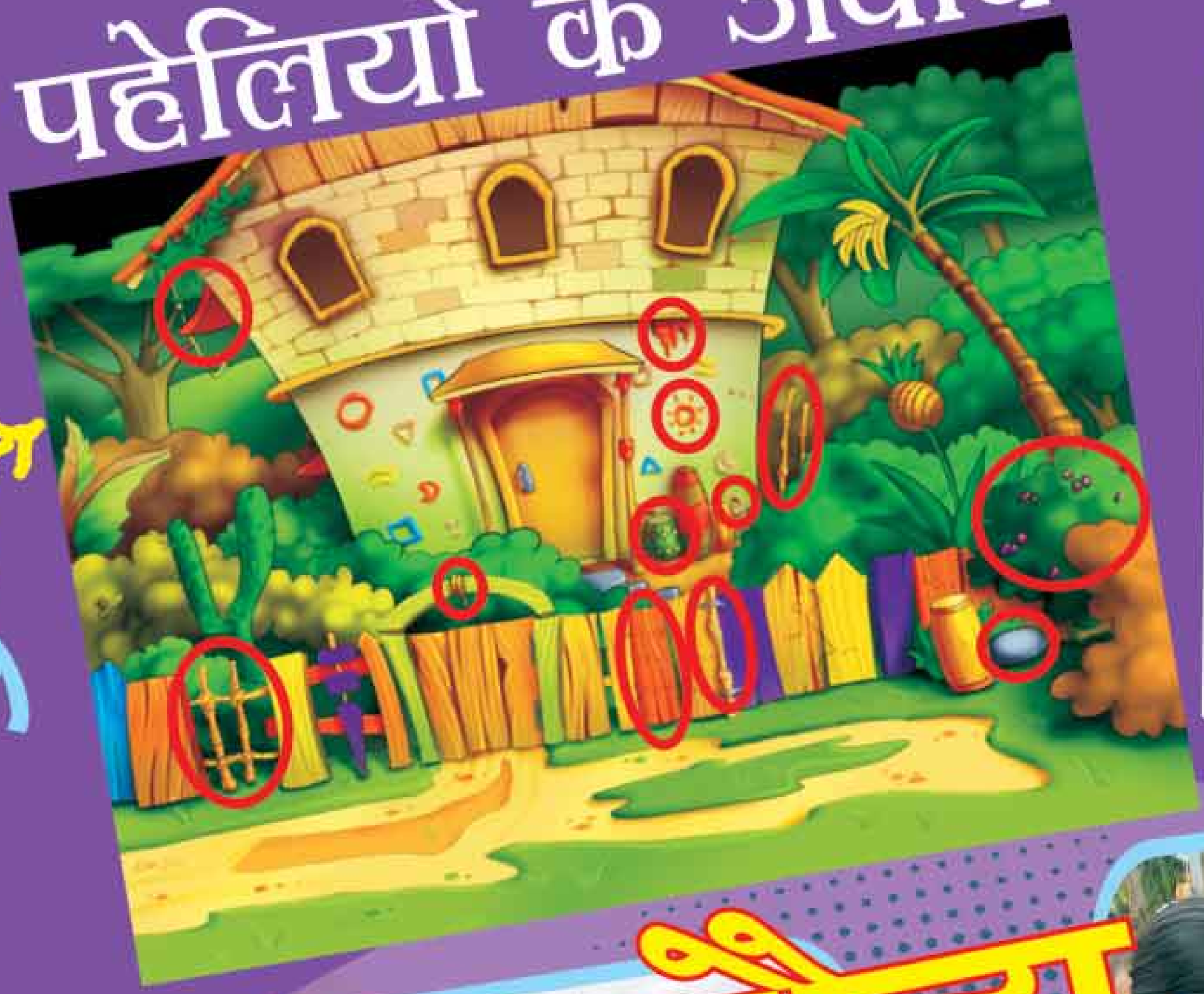

३

3	4	9	5	1	6	2	7	8
7	6	2	9	8	4	1	5	3
1	8	5	3	2	7	4	9	6
6	5	7	2	4	8	3	1	9
4	2	1	6	3	9	5	8	7
8	9	3	7	5	1	6	4	2
5	7	6	1	9	2	8	3	4
2	1	8	4	7	3	9	6	5
9	3	4	8	6	5	7	2	1

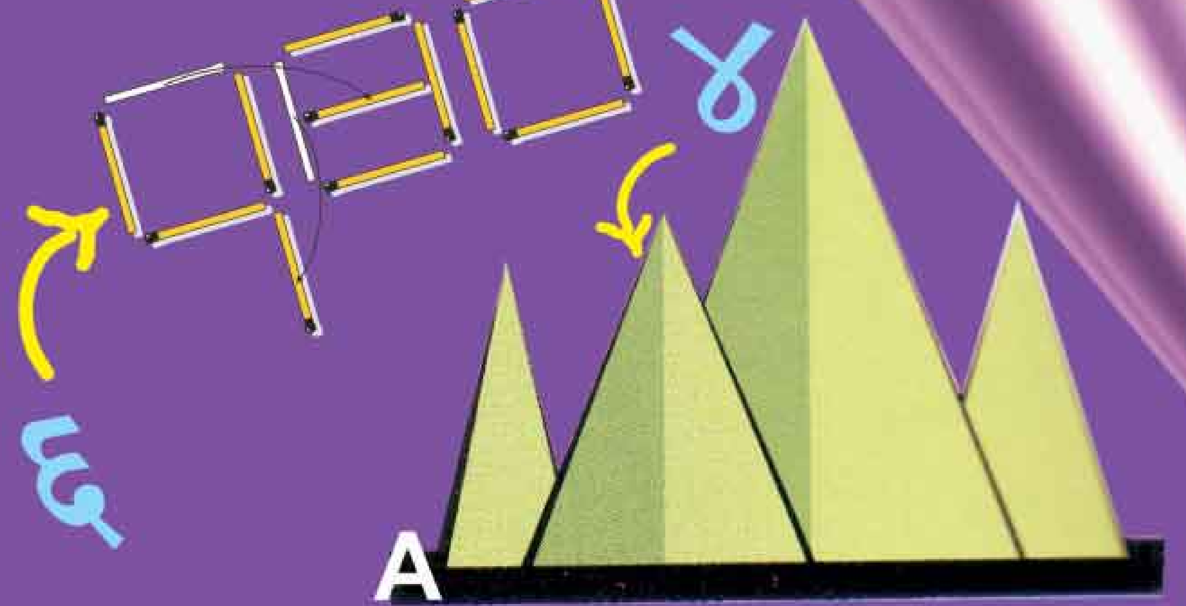

Abola etle bojo, jeno nikal na thayo eno bojo.

५

बड़ौदा

किड्स केम्प की झलक

भुज

Akram Express
July 2012
Year : 1, Issue : 3
Conti. Issue No.: 3

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada

Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set-1
on 08th of every month

सीमंधर सीटी

सूरत

Printer, Publisher and Owner - Mr. Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation, Editor - Mr. Dimple Mehta, Printing Press **Amba offset:-** Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad-14 and published at Mahavideh Foundation, 5, Mamtapark Society, Bh. Navgujarat College,Usmanpura, Ahmedabad-14.